• बाल कविता...

उठो लाल अब आंखें खोलो...

उठो लाल अब आंखें खोलो,
पानी लायी हूं मुंह धो लो।
बीती रात कमल दल फूले,
उसके ऊपर भंवरे झूले।
चिड़िया चहक उठी पेड़ों पे,
बहने लगी हवा अति सुंदर।
नभ में प्यारी लाली छाई,
धरती ने प्यारी छवि पाई।
भोर हुई सूरज उग आया,
जल में पड़ी सुनहरी छाया।
नन्ही नन्ही किरणें आई,
फूल खिले कलियां मुस्काई।
इतना सुंदर समय मत खोओ,
मेरे प्यारे अब मत सोओ।

■ **सोहन लाल द्विवेदी**

• चुटकुले...

मास्टर जी – सबसे ज्यादा नशा किसमें होता है?
चिंटू – किताब में।
मास्टर जी – कैसे?
चिंटू – क्योंकि किताब खोलते ही नींद आ जाती है।

चिंटू और पप्पू आपस में बातें कर रहे थे।
चिंटू – क्या तुम चीनी भाषा पढ़ कर सुना सकते हो?
पप्पू – हां, लेकिन तभी जब वह हिंदी या अंग्रेजी में लिखी हुई हो।

चिंटू – पप्पू, जरा अपनी साइकिल आज मुझे देना।
पप्पू – नहीं।
चिंटू – अगर मुझे साइकिल नहीं दोगे, तो मेरा दिल खट्टा हो जाएगा।
पप्पू ने झट से बोला – तो चीनी खा लेना।

पापा – चिंटू, आज तुम स्कूल क्यों नहीं जा रहे हो?
चिंटू – पापा, कल स्कूल में हमें तौला गया था और क्या पता आज बेच ही न दें।

मास्टर जी – एक तरफ पैसा और दूसरी तरफ अक्ल.. बताओ चिंटू तुम क्या चुनोगे?
चिंटू – पैसा
मास्टर जी – गलत, मैं तो अक्ल चुनता।
चिंटू – आपकी बात भी सही है, क्योंकि जिसके पास जो चीज नहीं होगी, वो वही चुनेगा।

• जानकारी...

क्या होती है क्लाउड सीडिंग...

संयुक्त अरब अमीरात का सबसे आधुनिक शहर दुबई पिछले दिनों लगभग पूरी तरह से जलमग्न हो गया था। रेगिस्तान में बसे इस शहर में इस तरह की बारिश पहले कभी नहीं देखने को मिली। दुबई में बारिश 70 साल का पुराना रिकॉर्ड तोड़ दिया। तो वहीं सिर्फ एक दिन में ही इतनी बारिश हुई जितनी पूरी 2 साल में होती है। आखिर क्या कारण रहा जो दुबई में भयंकर बारिश हुई। क्या है यह क्लाउड सीडिंग सिस्टम। जिसका इस्तोमाल कर दुबई में हुई बारिश। और महज 10 घंटों की बारिश ने दुबई में बाढ़ की स्थिति बना दी। चलिए जानते हैं।

16 अप्रैल को दुबई में भारी बारिश ने तबाही मचा दी। शहर में इतनी बारिश हुई जिसने पूरे शहर में हाहाकार मचा दिया। बारिश होने के पीछे कारण था क्लाउड सीडिंग। जिसके चलते बारिश हुई और फिर इतनी बारिश हुई जिसकी जरूरत भी नहीं थी। वैज्ञानिकों का मानना यह है दुबई में करवाई गई क्लाउड सीडिंग में कुछ गड़बड़ी हो गई थी। जिसके चलते भयंकर बारिश हुई।

यूएई के गल्फ स्टेट नेशनल सेंटर ऑफ मैट्रोलोजी ने इस बात की जानकारी दी कि 15 और 16 अप्रैल को अल-ऐन एयरपोर्ट पर क्लाउड सीडिंग के लिए विमानों ने उड़ान भरी थी। और दो दिनों में यह विमान सात बार उड़े थे। क्लाउड सीडिंग की इस प्रक्रिया में कहीं कोई चूक हुई। जिससे इतनी बारिश हुई।

क्लाउड सीडिंग बादलों से बारिश करवाने का एक तरीका होता है। क्योंकि बारिश करवाई जाती है। इसलिए इसे आर्टिफिशियल रेन कहा जाता है। हिंदी में कहें तो कृत्रिम बारिश। इसके लिए प्लेन्स द्वारा एक हाइट पर आसमान में सिल्वर आयोडाइड और ड्राई आइस के साथ नॉर्मल साल्ट बादलों में छोड़ा जाता है। यानी एक तरह से कहें तो बादलों से बारिश हो इसके लिए उसमें बीज दिए जाते हैं। इसे ही क्लाउड सीडिंग कहा जाता है।

क्लाउड सीडिंग किसी भी मौसम में नहीं होती। तेज धूप हो रही हो कहीं भी बादल ना हो। ऐसे में कोई क्लाउड सीडिंग करना चाहें तो यह मुमकिन नहीं है। इसके लिए आसमान में कम से कम 40 फीसदी बादल होने जरूरी हैं, जिनमें थोड़ा बहुत पानी भी हो।

अगर बादलों में पानी कम होगा और ह्यूमिडिटी नहीं होगी तो फिर बारिश नहीं हो पाएगी। लेकिन इस वक्त दुबई में साउदर्न जेट स्ट्रीम चल रही है। जिसके चलते क्लाउड सीडिंग सफल हो पाई। अगर ह्यूमिडिटी नहीं होगी तो बादलों से आती हुई पानी की बूंद जमीन पर गिरने से पहले ही भाप बन जाएगी।

• गोनू झा

रात का भाव

गतांक से आगे...

तुम्हें कुछ दिन - दुनिया की खबर भी है? एक यूनानी चिकित्सक ने सेंबल के बीज से जीवन रक्षक औषधि बनाई है और रातों-रात सेंबल के बीज की कीमत हीरों-जवाहरातों की तुलना में दो सौ गुना बढ़ गया है। जरा सोच, एक स्वर्ण मुद्रा में एक तोला सोना मिल जाता है कि नहीं? एक यूनानी व्यापारी आज ही महाराज के पास आया था। वह दो सौ स्वर्ण - मुद्राओं में एक तोला के भाव से सेंबल के बीज खरीदने की बात कर रहा था। उसी ने महाराज को बताया कि इस बीज से बनने वाली दवा से मरता आदमी भी जी उठेगा। अब समझी, कि मैं सेंबल के बीजों के लिए इतना बेचैन क्यों हूँ ? कल ही बाजार जाकर इन बीजों को बेच आऊँगा और इनसे मिलने वाले पैसों से सबसे पहले तुम्हारे लिए महल बनवाऊँगा और तुम्हें जेवर - जवाहरातों से लाद दूंगा। चल, पोटली ले आते हैं।'

जरा सोच, एक स्वर्ण मुद्रा में एक तोला सोना मिल जाता है कि नहीं? एक यूनानी व्यापारी आज ही महाराज के पास आया था। वह दो सौ स्वर्ण – मुद्राओं में एक तोला के भाव से सेंबल के बीज खरीदने की बात कर रहा था।

उसी ने महाराज को बताया कि इस बीज से बनने वाली दवा से मरता आदमी भी जी उठेगा। अब समझी, कि मैं सेंबल के बीजों के लिए इतना बेचैन क्यों हूँ ? कल ही बाजार जाकर इन बीजों को बेच आऊँगा...

पंडिताइन ने कहा 'अब रहने भी दो पंडित जी। रात भर में कौन - सी आफत आ जाएगी। जो बात सेंबल के बीज के बारे में तुमको मालूम है, वही बात अभी लोगों तक पहुँचते पहुँचेगी। अभी सो जाओ। सुबह उठकर सबसे पहले पोटली ले आऊँगी और तुम्हें दे दूंगी।'

गोनू झा को जो सन्देश बाहर खड़े चोर को देना था, वह दे चुके थे इसलिए उन्होंने मन मारने के अन्दाज में कहा - 'ठीक है भाग्यवान! जैसा तुम कहो! वैसे भी अभी सेंबल के बीज की कीमत महाराज के अलावा केवल मैं जानता हूँ।...अच्छा, चलो, सो ही जाते हैं।'

और गोनू झा बिस्तर पर लेट गए। पंडिताइन ने भी राहत की साँस ली और सो गई।

दूसरे दिन, सुबह- सुबह पंडिताइन घबराई-सी गोनू झा को झंकोरकर जगाने लगी -'उठिए पंडित जी! गजब हो गया! उठिए!'

गोनू झा उठे। उन्होंने घबराई सी पंडिताइन को देखा तो मुस्कुराकर पूछने लगे - 'तो पोटली गायब हो गई?'

पंडिताइन जवाब देने की बजाय सुबकने लगी। वह पछतावे से भरी हुई थी कि यदि उसने गोनू झा की बात मानकर रात को ही बनेरी से पोटली खोल ली होती तो यह हादसा नहीं होता। न जाने कौन रात में पोटली खोलकर ले गया जिसमें बहुमूल्य सेंबल के बीज थे!

गोनू झा को लगा कि चोर वाला राज अब खोल देने में भलाई है! न जाने सेंबल के बीज के सदमें में पंडिताइन पर क्या गुजरे!

-जारी

• रोचक...

सबसे बेहतर कैट

ईरान कई चीजों के लिए फेमस है। जिसमें प्राचीन सभ्यता, अरबी कविताएं, कबाब के साथ एक बिल्ली की प्रजाती भी शामिल है। दरअसल ईरान में खास तरह की बिल्लियां हैं। जिन्हें पार्शियन कैट या रीगल के नाम से जाना जाता है। ये बिल्लियां दिखने में काफी गुस्सैल लगती हैं। पर्शियन कैट की गिनती दुनिया की सबसे बेहतर बिल्लियों में होती है। लंबे बाल, चपटा चेहरा होने के अलावा इनमें कई खूबियां होती हैं।

कहा जाता है कि इन बिल्लियों की उत्पत्ति पर्शिया में हुई थी, जिसे अब ईरान के नाम से जाना जाता है। ये ब्रीड 1900 के आसपास पहली बार यूरोप में पहुंची थी। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद ये अमेरिका और यूरोप में दिखने लगी। इस बिल्ली को ज्यादातर अमीरों के घर में देखा गया। इसलिए इसे अमीरों की बिल्ली भी कहा जाता है।

• इंडिपेंडेंट...

बच्चों को इंडिपेंडेंट बनाने के लिए उनको फैसले लेने में मदद करें। छोटे–छोटे डिसीजन लेने से बच्चों में कान्फिडेंस बढ़ता है और वह इंडिपेंडेंट भी बनते हैं। बच्चों को अगर आप फैसले लेने में मदद करेंगे, तो वह आपके भी करीब आएंगे और पेरेंट्स, बच्चों का बॉन्ड मजबूत होगा। बहुत से पेरेंट्स बच्चों को स्पेस नहीं देते हैं। जिस कारण कई बार बच्चे चिड़चिड़े भी हो जाते हैं। इस समस्या से राहत पाने के लिए बच्चों को स्पेस देना जरूरी दोना होता है। स्पेस देने से वह वह ठीक से डिसीजन लें सकेंगे और पेरेंट्स, बच्चों के बीच दूरी भी कम होगी।